

LOK SABHA

Monday, March 18, 1968/Phalguna 28,
1889 (Saka)

The Lok Sabha met at Eleven of the
clock

[MR. SPEAKER in the Chair]

MEMBER SWORN

SHRI JHARKHANDEY (Ghosi)

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

PURCHASE OF FERTILIZERS

*658. SHRI K. P. SINGH DEO : Will the Minister of WORKS, HOUSING AND SUPPLY be pleased to refer to the reply given to Unstarred Question No. 2539 on the 4th March, 1968 and state :

(a) the reasons for the change in the pattern of buying fertilizers through negotiations instead of inviting tenders; and

(b) the benefits likely to be derived therefrom ?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF WORKS, HOUSING AND SUPPLY (SHRI IQBAL SINGH) : (a) It was felt that some of the major suppliers of fertilizers in the world had formed cartels and were quoting more or less the same C. & F. prices against open tenders. Negotiations were held with the suppliers individually and purchases made at rates which were considerably lower than those received against tender enquiries.

(b) As a result of negotiations it has been possible to effect large savings in Foreign Exchange Expenditure. It has also been possible to get the maximum quantities of the type of fertilizers needed by the Department of Agriculture within the stipulated period.

SHRI K. P. SINGH DEO : In view of the fact that after a good harvest last year, the demand for fertilizers was increasing, may I know whether the Gov-

ernment is assured of imported fertilizers through this new change in policy till the end of the five Year Plan ?

SHRI IQBAL SINGH : We will be going on purchasing fertilizers as far as there is need for the import of fertilizers. As may be remembered, last time, I had laid a statement on the Table of the House showing what will be the total requirement and what will be the need at least for the next few years.

SHRI K. P. SINGH DEO : May I know the quantity of the various imported chemicals which are necessary for our domestic production and whether the Government is assured of the quantities, because in 1966, due to the shortage in the supply of sulphur the production of fertilizers dropped. So may I know whether the Government has assured itself of the imported chemicals till the end of the five Year Plan ?

SHRI IQBAL SINGH : Regarding the import of those commodities, I may point out that the Ministry of Petroleum and Chemicals is dealing with the new materials. We purchase fertilizers on import.

SHRIMATI TARKESHWARI SINHA : May I know what is the quantum of fertilizers this country will get out of the negotiations ? You say that there has been some advantage by these negotiations. I would like to know what was the original targeted quantity that was to be imported at the previous price and what is the benefit that is now likely to accrue to us, to this country, because of these negotiations ?

SHRI IQBAL SINGH : It is a vague question, because every year we see how much of fertilizers we require and how much would have to be imported,—import from different countries and through different loan agreements. But I can only say that in the last negotiations which we held in October and November last year, there was a saving

of Rs. 80 lakhs due to purchase by negotiations.

SHRI SWELL : What has happened to the Government's extension of marketing and pricing facilities to certain fertilizer companies to come and establish plants in India? May I know how many of those companies came forward, and how much of the fertilizer out of the 30 per cent to be purchased by Government from these plants at negotiated price will accrue to Government stock and at what prices?

SHRI IQBAL SINGH : It is better that this question is put to the Ministry of Petroleum and Chemicals who are dealing with such matters.

श्री कामेश्वर सिंह : मंत्री महोदय ने बताया है कि टेण्डर सिस्टम को बन्द करने और नेगोशिएशन के द्वारा फर्टिलाइजर खरीदने की वजह से काफी विदेशी मुद्रा बचाई गई है। मैं यह जानना चाहता हूँ कि अभी तक कुल कितनी विदेशी मुद्रा बचाई गई है।

श्री इकबाल सिंह : जैसा कि मैं ने अभी बताया है, एक ट्रांजेक्शन में कोई अस्सी लाख रुपये की विदेशी मुद्रा का फायदा हुआ है। जो फायदा होता है, वह फर्टिलाइजर पूल में चला जाता है। इसलिए इस साल फर्टिलाइजर पूल का नुकसान पिछले साल से कम है।

श्री क० ना० तिवारी : मैं यह जानना चाहता हूँ कि हम किन-किन देशों से फर्टिलाइजर मंगाते हैं और उसकी कीमत क्या है। क्या यह सही है कि अपने देश में जो फर्टिलाइजर बनता है, उस की कीमत बाहर से आने वाले फर्टिलाइजर की कीमत से ज्यादा है? जब यहां पर फूड-ग्रेज के भाव गिर रहे हैं, तो किसानों को सस्ता फर्टिलाइजर देने के लिए और फर्टिलाइजर की कीमत गिराने के लिए सरकार क्या कदम उठा रही है?

श्री इकबाल सिंह : हम बहुत से मुल्कों से फर्टिलाइजर इम्पोर्ट करते हैं, जैसे वेस्ट यूरोपियन कन्ट्रीज, वेस्ट जर्मनी, फ्रांस, इटली

यूनाईटेड किंगडम, यू०एस०ए० और केनेडा। इसके अलावा स्टेट ट्रेडिंग कॉर्पोरेशन के जरिये कुछ ईस्ट यूरोपियन कन्ट्रीज से भी और जापान से भी मंगाते हैं। हिन्दुस्तान में फर्टिलाइजर की प्राइसिज कुछ ज्यादा है। इसीलिए तो फर्टिलाइजर पूल को रखा गया है।

श्री क० ना० तिवारी : मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दिया गया है। मैं यह जानना चाहता हूँ कि बाहर से मंगाए जाने वाले फर्टिलाइजर और अपने देश में बनने वाले फर्टिलाइजर की कीमतों में कितना अन्तर है और यहां के फर्टिलाइजर की कीमत को गिराने के लिए क्या कदम उठाए जा रहे हैं।

श्री इकबाल सिंह : जो फर्टिलाइजर देश में बनता है और जो बाहर से आता है, उनकी कीमत एक हो, इसीलिए तो फर्टिलाइजर पूल है।

श्री क० ना० तिवारी : अध्यक्ष महोदय, मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दिया जा रहा है। मैंने यह पूछा है कि दूसरे देशों से जो फर्टिलाइजर मंगाया जाता है, उसकी क्या कीमत पड़ती है और जो फर्टिलाइजर देश में बनता है, उसकी क्या कीमत पड़ती है और यहां के फर्टिलाइजर की कीमत को गिराने के लिए सरकार क्या इंतजाम कर रही है।

श्री इकबाल सिंह : जो फर्टिलाइजर देश में बनता है, वह ज्यादा मंहगा है और जो दूसरे देशों से इम्पोर्ट किया जाता है, वह सस्ता है और उसका बेनिफिट फर्टिलाइजर पूल को होता है।

MR. SPEAKER : Are you not able to give the difference between the two? What are the different prices of these two things?

श्री इकबाल सिंह : वह डिफरेंस देना तो बहुत मुश्किल है, क्योंकि एक सीदे और दूसरे सीदे की प्राइसिज में और इस के अलावा एक मुल्क की प्राइसिज और दूसरे मुल्क की प्राइसिज में फर्क होता है। लेकिन प्राइसिज

में जो डिफरेंस होता है, वह फर्टिलाइजर पूल में चला जाता है।

श्री क० ना० तिवारी : अध्यक्ष महोदय, मेरे प्रश्न का उत्तर दीजिये।

MR. SPEAKER : Evidently he has not got the answer.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अगर मंत्री महोदय के पास यह सूचना नहीं है, तो वह नोटिस मांग सकते हैं।

MR. SPEAKER : He could have said so. Twice we have asked him. He has not got the answer.

श्री ओ० प्र० त्यागी : मैं यह जानना चाहता हूँ कि इन समय देश में उर्वरक की कितनी मांग है, भारतवर्ष में उसकी कितनी वार्षिक पैदावार हो रही है, हम को कितना उर्वरक बाहर से मंगाना पड़ता है और कितने वर्षों में हम इस सम्बन्ध में स्वावलम्बी हो जायेंगे, ताकि हम को बाहर से उर्वरक न मंगाना पड़े।

श्री इकबाल सिंह : ये आंकड़े मेरे पास नहीं हैं।

SHRI K. SURYANARAYANA : What is the quantity imported from foreign countries in our currency and in foreign currency ?

SHRI IQBAL SINGH : Quantity imported in foreign currency was to the tune of 111 million dollars in 1966-67 and 281 million dollars in 1967-68.

SHRI K. SURYANARAYANA : Which are the different countries from which it was imported ?

MR. SPEAKER : There are different countries.

श्री महाराज सिंह भारती : क्या यह सच है कि सरकार ने गत वर्ष बाहर से जो खाद मंगाया है, उसकी औसत कीमत 1,200

रुपये फी-टन नाइट्रोजन के हिसाब से आई है और जो खाद देश में बना है, उसकी बिक्री की औसत कीमत 2,000 रुपये फी-टन नाइट्रोजन के हिसाब से है?

श्री इकबाल सिंह : मैं इस के बारे में कुछ नहीं कह सकता हूँ। अगर माननीय सदस्य यह सवाल पेट्रोलियम मिनिस्ट्री से पूछें तो अच्छा है।

SHRI P. VENKATASUBBAIAH : In view of the fact that the prices of fertilizers in foreign countries are falling or, shall I say, crashing down very rapidly, may I know whether Government take sufficient care as not to enter into long-term agreements but only enter into short-term agreements so as to get the maximum benefit of declining prices of imported fertilizers ?

SHRI IQBAL SINGH : We are thinking of long-term agreements also.

SHRI S. KANDAPPAN : Sir, the Minister has not understood the question.

SHRI IQBAL SINGH : Regarding the prices and entering into long-term agreements I said that we are thinking on those lines.

THE MINISTER OF WORKS, HOUSING AND SUPPLY (SHRI JAGANNATH RAO) : So far we have not entered into any long-term arrangement with any country. As and when there is demand for imports, our officers go and negotiate and as a result of the negotiations the prices have been coming down.

SHRI P. VENKATASUBBAIAH : My question was very specific. In view of the fact that there is decline in the price of imported fertilizers, may I know whether the Government will consider the advisability of entering into only short-term agreements so as to avoid paying a higher price ?

SHRI JAGANNATH RAO : We have not entered into any long-term agreement.

श्री कंबर लाल गुप्त : मंत्री महोदय ने कहा कि जो पिछले महीनों में फटिलाइजर खरीदा गया उस पर 80 लाख का लाभ हुआ है निगोशिएशन करने से तो मैं पूछना चाहता हूँ कि कितने का कुल फटिलाइजर था जो खरीदा जिसमें कि 80 लाख रुपये का लाभ हुआ और वह टेंडर से खरीदा जाता तो उसकी कीमत कितनी होती तथा निगोशिएशन से खरीदा गया तो कितनी कीमत देनी पड़ी?

श्री इकबाल सिंह : टेण्डर में खरीदा जाता तो टेण्डर की प्राइस तो तकरीबन हमेशा तजुबों के तौर पर मैं कह सकता हूँ

श्री कंबर लाल गुप्त : तजुबों के तौर पर जवाब में नहीं चाहता मैं ने तो सीधा सवाल किया था, अगर जवाब उन के पास नहीं है तो कह दें कि जवाब नहीं है, इन्होंने कहा कि 80 लाख का फायदा हुआ है तो इसको इन्होंने कॅलकुलेट किया होगा कि कितनी प्राइस टेण्डर में थी और कितनी निगोशिएशन में थी तो यही मैं पूछना चाहता हूँ कि कुल कितने का फटिलाइजर खरीदा गया और उसकी प्राइस टेण्डर में कितनी थी और निगोशिएशन से कितनी देनी पड़ी?

श्री इकबाल सिंह : 80 लाख का जो फायदा हुआ वह निगोशिएशन से हुआ। पिछले साल भी निगोशिएशन से खरीदा था और इस साल भी निगोशिएशन से खरीदा है। इस साल 30 लाख का फायदा उसमें हुआ।

SHRI RANGA : May I suggest that the hon. Minister meet some of the hon. Members privately and explain the position if he is not able to do it in the House?

MR. SPEAKER : Next question.

PRICES OF CONSUMER GOODS

+

*660. **SHRI RAGHUVIR SINGH SHASTRI :**

SHRI HIMATSINGKA :

DR. KARNI SINGH :

Will the Minister of FINANCE be pleased to state :

(a) the overall percentage of increase in the prices of consumer goods since June, 1967;

(b) the extent of increase in the prices of various consumer goods since that time; and

(c) the steps taken by Government in pursuance of his assurances during the Budget session last year to stabilise the prices of consumer goods and how far they have been successful?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI K. C. PANT) : (a) and (b). The official price series does not show the overall variation in the prices of all consumer goods separately. A statement showing changes in the prices of important consumer goods between June 3, 1967 and February 24, 1968, the latest week-end for which data are available, is laid on the Table of the House. [Placed in Library. See No. LT-471/68] Over this period while prices of rice, wheat and sugar have shown some increases, prices of other cereals, pulses, edible oils and soap showed perceptible decline.

(c) Government has taken various measures to stabilise prices. These include measures to secure adequate imports of foodgrains, maintenance of an extended system of public distribution of foodgrains and efforts to raise agricultural and industrial production. The new agricultural strategy is designed to raise productive capacity in the agricultural sector through such measures as supply of improved seeds and increased provision of institutional credit. Measures intended to increase industrial production include liberalisation of industrial licensing, provision of adequate import of raw materials to the